an>

Title: Need to include 'Logic' as a subject in schools and colleges in the country.

श्री दहन मिश्रा (श्रावस्ती) : माननीय अध्यक्ष महोदया, यह विषय लाखों-करोड़ों युवाओं के भविष्य से जुड़ा हुआ है। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूँ कि 'तर्कशास्त्र' यानी लॉजिक को हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट स्तर पर पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय बनाया जाए। इस प्रस्ताव के समर्थन में मेरे तीन मुख्य तर्क हैं। एक, स्कूल एवं कॉलेज/यूनिवर्सिटी के बाद होने वाली लगभग हर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परीक्षा में लॉजिकल रीज़निंग यानी तार्किक विवेचना का सम्पुट अथवा सेक्शन होता है। ऐसी कुछ प्रमुख राष्ट्रीय परीक्षाएं हैं जैसे सी.एल.ए.टी, सी.ए.टी. एवं यू.पी.एस.सी.-सी.सैट इत्यादि। अंतर्राष्ट्रीय परीक्षाओं में प्रमुख हैं- जी.एम.ए.टी, एल.एस.ए.टी., एस.ए.टी., एम.सी.ए.टी. इत्यादि। स्कूल में ये विषय न पढ़ाये जाने के कारण छात्र वर्ग को इसके अध्ययन हेतु प्राइवेट कोचिंग्स में जाना पड़ता है। मेरे संज्ञान में बंगाल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन के अलावा ऐसा कोई राजकीय शैक्षिक परिषद नहीं है, जहाँ माध्यमिक स्तर पर तर्कशास्त्र यानी लॉजिक पाठ्यक्रम का अंग हो। यही नहीं, कॉलेज में भी तर्कशास्त्र का ज्ञान मात्र दर्शनशास्त्र (फिलॉसोफी) के छात्र को नसीब होता है।

दूसरा, जैसा कि इस सदन के माननीय सदस्यों को संभवतः ज्ञात हो, विश्व में मात्र दो ऐतिहासिक सभ्यताएँ ऐसी हुई हैं, जिन्होंने खुद का तर्कशास्त्र एवं वाद-विवाद के सुनियोजन की परम्परा ईज़ाद की है। पहले हम, यानी भारतीय और दूसरे, इस मामले में हम से कहीं अधिक विख्यात् सभ्यता यूनानी अर्थात् 'ग्रीक' सभ्यता है, जिसका 'अरिस्टोटेलीयन' अर्थात् अरस्तु-निर्दिष्ट तर्कशास्त्र सदियों से समस्त पाश्चात्य विज्ञान एवं अन्वेषण का मूलाधार है।

तीसरा, भारतीय परम्परा में तीन मुख्य प्रकार के वाद-विवाद परिभाषित हैं- (अ) वादः ऐसा शास्त्रार्थ/डिबेट जहाँ दोनों/सारे पक्ष सत्यान्वेषी हों और तर्क एवं तथ्य के आधार पर विषय के उचित निष्कर्ष पर पहुंचने में चेष्टारत हों। (ब) जल्पः ऐसा शास्त्रार्थ/डिबेट जिसमें छल एवं अर्थ-सत्य के माध्यम से मात्र विजय प्राप्ति की चेष्टा हो। (स) वितंडः ऐसा शास्त्रार्थ/ डिबेट जिसका मूल उद्देश्य छल, कपट, असत्य, किसी भी उपाय से विरोधी पक्ष को नकारना हो।

अगर भारत सरकार स्कूल के पाठ्यक्रम में तर्कशास्त्र को सम्मिलित करने के मेरे प्रस्ताव को माने तो हमारे देश की धरोहर अर्थात हमारे बच्चे ही नहीं बल्कि सारी जनता, जनता के भावी प्रतिनिधियों एवं हम सब के प्रिय हमारे मीडिया के भाई बहनों की सोचने-विचारने, प्रश्न पूछने, उत्तर देने, एवं विश्लेषण करने की क्षमता पर अति-उत्तम प्रभाव पड़ेगा। ऐसा मेरा मानना है।

माननीय अध्यक्ष : श्री पी. श्रीनिवास रेड्डी - उपस्थित नहीं।

श्री भैरों प्रसाद । श्री भैरों प्रसाद जी आपकी बात सदन के सामने आ गई है और उस पर उत्तर भी आ गया है।